

ॐ

**निर्भयता संगठन आनंद
उन्नति कारक दस रामाज्ञाएँ**

1. तू काया-वाचा-मन से सतत् सत्य बोलने का जाग्रत रहते हुए प्रयत्न किया कर ।
2. शरीर स्वास्थ्य, आध्यात्मिक उन्नति में बड़ा ही सहायक होता है। इसलिए तू शरीर को स्वस्थ रखने के लिए सात्विक आहार तथा नियमित व्यायाम लेने का अवश्य प्रयत्न किया कर।
3. श्रद्धा भक्तियुक्त अंतःकरण से सतत् ध्येय की जागृति रखते हुए सांस-सांस के साथ नामस्मरण किया कर ।
4. तमोगुण को बढ़ाने वाले तथा मादक पदार्थ जैसे मांस-मदिरा, गांजा आदि का कभी सेवन न कर ।
5. संसार की कोई शक्ति मेरी प्रसन्नता, धैर्य तथा आनंद को मुझसे छीन नहीं सकती । इस धारणा को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाकर तू सदा प्रसन्न तथा आनंदित रहा कर ।
6. जहाँ तक हो सके तू काया-वाचा-मन से परोपकार करने का प्रयत्न किया कर और किसी के हृदय को व्यर्थ में दुखी कभी न बना ।
7. सत्संगति, सदविचार, सदाचार और सदग्रंथों का स्वाध्याय इन चारों का नित्य आदर से सेवन कर ।
8. चाहे कितना भी कष्ट क्यों न सहन करना पड़े कभी किसी से विशेषकर अपनों से द्वेष न कर । कभी भी अशांत तथा निराश न होने का सतत् प्रयत्न कर ।
9. जीवन के उन्नतिदायक नियमों का तथा साधन-भजन के नियमों का आलस्य रहित होकर उत्साह से पालन कर ।
10. प्रभुस्मृति से युक्त निष्कपट हँसी से अपने दैनिक व्यवहार उसी महान के निर्भयता, संगठन तथा आनंद रूप प्रकाश में करने का प्रयत्न कर । जीवन उज्ज्वल एवं पूर्ण सुखी होगा ।